राग आसा

गुरमति संगीत पद्धति में, आसा, बड़ा महत्त्वपूर्ण राग है। आसा राग की, मधुर स्वरावलियाँ, पंजाब की पवित्र धरती पर, कण–कण में सुनाई पड़ती हैं। हर प्रभात की सुनहरी किरणें, इसी राग की मधुर ध्वनि के साथ प्रवेश करती हैं और प्रत्येक शाम की लाली जब कुदरत की गोद में छिपने लगती है तो इस राग की मधुर स्वरावली द्वारा cfygkjh dnjfr ofl vk की कीर्ति गाती हैं। प्राचीन या मध्य कालीन ग्रन्थों में आसा राग का उल्लेख नहीं मिलता। इस राग को शास्त्रीय रूप प्रदान करने में बाबा फरीद और श्री गुरू नानक देव जी का सबसे अधिक योगदान है।

आरोह – स, रे म, प, ध सं।

अवरोह – सं नी ध प, म, ग रे स रे ग स।

स्वर – आरोह में गंधार व निषाद वर्जित, अन्य शुद्ध।

थाट – बिलावल

जाति – औड़व–सम्पूर्ण

समय – सुबह और शाम का संधि प्रकाश।

वादी – मध्यम

संवादी – षड़ज

मुख्य अंग – रे म, प, ध सं, नी ध प म, ग स रे ग स।

स्वर विस्थार –

1. स, स रे ग स, स नी़ ध़ प़, प़ ध़ नी़ ध़, प़ ध़ स,
   स रे ग रे ग स, स रे म, म प, प ध प म, ग रे ग स।
2. रे म, म प ध प म, प ध नी ध प, म प ध, प ध सं, सं रें सं,
   सं रें गं रें गं सं, सं रें मं, गं रें गं सं, सं रें सं नी ध,
   प ध सं नी ध प, म, प म ग, स रे ग, स।

आसा महला ५ तिपदे ॥ (४०६-७)

ओहा प्रेम पिरी ॥१॥ रहाउ ॥ कनिक माणिक गज मोतीअन लालन नह नाह नही॥१॥ राज न भाग न हुकम न सादन॥ किछु किछु न चाही॥२॥ चरनन सरनन संतन बंदन॥ सुखो सुखु पाही॥ नानक तपति हरी॥ मिले प्रेम पिरी ॥३॥३॥१४३॥

आसा॥ (४७८)

सुतु अपराध करत है जेते॥ जननी चीति न राखसि तेते॥१॥ रामईआ हउ बारिकु तेरा॥ काहे न खंडसि अवगनु मेरा॥१॥ रहाउ॥ जे अति क्रोप करे करि धाइआ॥ ता भी चीति न राखसि माइआ॥२॥ चिंत भवनि मनु परिओ हमारा॥ नाम बिना कैसे उतरसि पारा॥३॥ देहि बिमल मति सदा सरीरा॥ सहजि सहजि गुन रवै कबीरा ॥४॥३॥१२॥

राग आसा

(1) तीन ताल

LFkkbZ

						संरें	संनी	धनी	धप	म	प	—	धनी	प	ध
						ओ0	00	हा0	00	0	प्रे	0	म0	0	पि
सं	—	—	—	—	—	—	—	सं	सं	सं	सं	संरें	संनी	ध	ध
री	0	0	0	0	0	0	0	क	नि	क	मा	णि0	क0	ग	ज
—	पध	प	म	गरे	ग	स	स	रे	—	म	—	प	—	धनी	पध
0	मोती	अ	न	ला0	0	ल	न	न	0	ह	0	ना	0	ह0	न0
सं	—	—	—	—	—										
ही	0	0	0	0	0										
X				2				0				3			

vrjk

—	म	म	म	—	प	प	प	—	धनी	प	ध	—	सं	सं	सं
0	रा	ज	न	0	भा	ग	न	0	हुक	म	न	0	सा	द	न
—	रेंरें	रें	रें	रें	सं	संगं	रेंगं	सं	—	—	—	संरें	सनी	ध	प
0	किछु	कि	छु	न	0	चा0	00	ही	0	0	0	00	00	0	0
—	संसं	सं	रें	—	संरें	मं	मं	—	गं	रें	सं	संगं	रेंगं	रें	सं
0	चर	न	न	0	सर	न	न	0	सं	त	न	बं0	00	द	न
—	सं	सं	नीध	—	धध	म	प	प	—	—	—	—	ध	ध	धप
0	सु	खो	00	0	सुखु	0	पा	ही	0	0	0	0	ना	न	क0
मग	ग	रे	ग	रे	—	स	—	रे	—	म	म	प	—	धनी	पध
0	तप	ति	ह	री	0	0	0	मि	0	ले	0	प्रे	0	म0	0पि
सं	—	—	—	—	—										
री	0	0	0	0	0										
X				2				0				3			

राग आसा

(2) ताल दीपचंदी

LFkkbZ%

प	ध	—	मम	—	म	—	प	—	—	धध	नी	प	ध
रा	0	0	मई	0	0	0	आ	0	0	हऊ	0	0	0
सं	—	—	सं	—	सं	रें	नी	—	—	ध	—	प	—
बा	0	0	रि	0	0	कु	ते	0	0	रा	0	0	0
ध	—	—	ध	—	—	ध	ध	—	—	ध	—	धप	म
का	0	0	हे	0	0	न	खं	0	0	ड	0	00	सि
म	प	—	प	—	—	ध	म	प	—	म	मग	रेग	स
अ	व	0	ग	0	0	नु	मे	0	0	0	रा0	00	0
x			2				0			3			

vUrjk%

प	प	—	ध	नी	प	ध	सं	—	—	सं	—	—	—सं
सु	तु	0	अ	0	प	0	रा	0	0	ध	0	0	0क
रें	—	—	रें	—	सं	—	संगं	रेंगं	—	सं	—	नीध	प
र	त	0	है	0	0	0	जे0	00	0	ते	0	00	0
ध	ध	—	ध	—	—	—	ध	—	—	ध	—	प	म
ज	न	0	नी	0	0	0	ची	0	0	ति	0	0	न
म	प	—	प	—	प	ध	म	प	—	म	मग	रेग	स
रा	0	0	ख	0	सि	0	ते	0	0	ते	00	00	0
x			2				0			3			

dhrZudkj HkkbZ fujatu flag] t0onh dyk